बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

(यह भाषण कपूरथला राज्य में हिन्दुओं, सिखों और मुसलमानों की एक सम्मिलित सभा में दिया गया था)

भाइयो! यदि कोई व्यक्ति आपसे कहे कि बाज़ार में एक दुकान ऐसी है, जिसका कोई दुकानदार नहीं है, न कोई उसमें माल लाने वाला है न बेचने वाला है और न कोई उसकी रखवाली करता है, दुकान आपसे आप चल रही है, आपसे आप उसमें माल आ जाता है और आपसे आप ख़रीदारों के हाथ बिक जाता है, तो क्या आप उस व्यक्ति की बात मान लेंगे? क्या आप स्वीकार कर लेंगे कि किसी दुकान में माल लाने वाले के बिना आप से आप माल आ भी सकता है, माल बेचने वाले के बिना आप से आप बिक भी सकता है, हिफाजत करने वाले के बिना आप से आप चोरी और लूट से बचा भी रह सकता है? अपने दिल से पूछिए, ऐसी बात आप कभी मान सकते हैं? जिसकी अक्ल और सूझबूझ ठिकाने हो उसके दिमाग में कभी यह बात आ सकती है कि कोई दुकान दुनिया में ऐसी भी होगी?

मान लीजिए एक आदमी आप से कहता है कि इस शहर में एक कारखाना है जिसका न कोई मालिक है, न इन्जीनियर, न मिस्त्री सारा कारखाना आप से आप क़ायम हो गया है, सारी मशीनें खुद ही बन गई हैं, खुद ही सारे पुर्ज़े अपनी-अपनी जगह पर लग भी गए खुद ही सब मशीनें चल भी रही हैं और खुद ही उन में से अजीब-अजीब चीज़ें बन-बन कर निकल भी रही हैं। सच बताइये जो आदमी आपसे यह बात कहेगा क्या आप हैरत से उसका मुंह न देखने लगेंगे? क्या आपको यह शक न होगा कि कहीं उसका दिमाग़ खराब तो नहीं हो गया है। क्या एक पागल के सिवा ऐसी गलत बात कोई कर सकता है?

दूर की मिसालों को जाने दीजिए, यह बिजली का बल्ब जो आपके सामने जल रहा है, क्या किसी के कहने से आप मान सकते हैं कि रोशनी इस बल्ब में आप से आप पैदा हो जाती है? यह कुर्सी जो आप के सामने रखी है, क्या किसी बड़े से बड़े धुरन्धर दार्शनिक (फ़लसफ़ी) के कहने से भी आप मान सकते हैं कि यह आप से आप बन गई है? ये कपडे जो आप पहने हुए हैं, किसी दुनिया के बड़े-से बड़े आलिम और पंडित के कहने से भी आप यह तस्लीम करने के लिए तैयार हो जायेंगे कि उनको किसी ने बुना नहीं है? ये आप से आप ही बुन गए हैं? यह घर जो आपके सामने खडे हैं यदि तमाम दुनिया की यूनिवर्सिटियों के प्रोफ़ेसर मिल कर भी आप को यक़ीन दिलाना चाहें कि इन घरों को किसी ने नहीं बनाया है, बल्कि यह आप से आप बन गए हैं, तो क्या उनके यकीन दिलाने से आप को ऐसी ग़लत बात पर यक़ीन आ जायेगा? ये कुछ मिसालें तो आप के सामने की हैं, रात-दिन जिन चीजों को आप देखते हैं, उन्ही में से कुछ मैंने बयान की हैं।

अब विचार कीजिए, एक मामूली दुकान के बारे में जब आप की अक्ल यह नही मान सकती कि वह किसी दुकानदार के बिना क़ायम हो गई और किसी चलाने वाले के बिना चल रही है तो इतनी बड़ी सृष्टि के बारे में आप की अक़्ल इस पर किस प्रकार यकीन कर सकती है कि वह किसी बनाने वाले के बिना बन गयी है और किसी चलाने वाले के बिना चल रही है?

जब एक मामूली से कारख़ाने के बारे में आप यह मानने के लिए तैयार नहीं हो सकते कि वह किसी बनाने वाले के बिना बन जायेगा और किसी चलाने वाले के बिना चलता रहेगा, तो धरती और आकाश का यह ज़बरदस्त कारखाना जो आपके सामने चल रहा है, जिसमें चाद, सूरज और बड़े-बड़े नक्षत्र (सय्यारे) घडी के पुर्ज़ों के समान चल रहे हैं, जिस में समुद्रो से भापे उठती हैं, भापो से बादल बनते हैं, बादलो को हवाए उडा कर धरती के कोने-कोने में फैलाती हैं, फिर उनको ठीक समय पर ठंडक पहुंचा कर दोबारा भाप से पानी बनाया जाता है, फिर वह पानी बारिश की बूदों के रूप में धरती पर गिराया जाता है, फिर उस बारिश की वजह से मरी हुई धरती के पेट से तरह-तरह के लहलाते हुए पेड पौधे निकाले जाते हैं, क़िस्म-क़िस्म के अनाज रग-बिरगे फल, तरह-तरह के फूल पैदा किये जाते हैं। इस कारख़ाने के बारे में आप यह कैसे मान सकते हैं कि यह सब कुछ किसी बनाने वाले के बिना आप से आप बन गया और किसी चलाने वाले के बिना आप से आप चल रहा है? एक ज़रा-सी कुर्सी छोटी सी दीवार के बारे में कोई कह दे कि यह चीज़ें खुद बनती हैं, तो आप फ़ौरन फ़ैसला कर देंगे कि

उसका दिमाग़ बिगड़ गया है, फिर भला उस व्यक्ति के दिमाग के खराब होने में क्या शक होसकता है जो कहता है कि धरती आप से आप बन गई, जानवर आप से आप पैदा हो गये, इन्सान जैसी हैरतनाक चीज़ आपसे आप बन कर खड़ी हो गई?

इन्सान का शरीर जिन पदार्थो से मिल कर बना है, उन सब को साइसदानों ने अलग–अलग कर के देखा तो मालूम हुआ कि कुछ लोहा है, कुछ कोयला कुछ गन्धक, कुछ फ़ास्फ़ोरस, कुछ कैल्शियम, कुछ नमक, कुछ गैसें और बस ऐसी ही कुछ और चीजें हैं, जिंन की पूरी क़ीमत कुछ रुपयों से अधिक नहीं है। ये चीज़ें जितनें–जितनें वज़न के साथ इन्सान के शरीर में शामिल हैं उतने ही वज़न के साथ ले लीजिये और जिस प्रकार जी चाहे मिला कर देख लीजिए, इन्सान किसी तर्कीव से न वन सकेगा। फिर किस प्रकार आपकी अक़्ल यह मान सकती है कि इन कुछ वेजान चीजों से देखता, सुनता, बोलता, चलता-फिरता इन्सान, वह इन्सान जो हवाई जहाज और रेडियो बनाता है, किसी कारीगर की हिक्मत और सूझवूझ के विना आप से आप वन जाता है। कभी आपने सोचा कि माँ के पेट की छोटी सी फैक्टी में किस प्रकार इन्सान तैयार होता है, वाप की कायसाधकता का इसमें कोई हाथ नहीं, माँ की हिकमत का इसमें कोई काम नही, एक छोटी-सी थैली में दो कीडे जो सूक्ष्म–दर्शक यत्र (Microscope) के विना देखे तक नही जा सकते, कव आपस मे मिल जाते हैं, माँ के खून ही से उनको खुराक पहुचना शुरू होती है, वही लोहा, गन्धक, फ़ास्फोरस वग़ैरह सब चीजें जिनको मैंने ऊपर वयान किया एक खास वज़न और एक खास निस्वत के साथ वहाँ जमा होकर लोथड़ा बनती हैं फिर उस लोथडे मे जहा आखें बननी चाहिए वहा आखें वनती हैं, जहा कान बनने चाहिए वहा कान बनते हैं जहा दिमाग़ बनना चाहिए वहा दिमाग़ बनता है, जहा दिल बनना चाहिए वहा दिल वनता है, हड्डी अपनी जगह पर, मास अपनी जगह पर, रगें अपनी जगह पर, यानी एक–एक पुर्ज़ा अपनी–अपनी जगह पर ठीक बैठता है, फिर उसमें जान पड़ती है, देखने की ताक़त, सुनने की ताक़त चखने और सूघने की ताक़त, वोलने की ताक़त सोचने और समझने की ताकत, और कितनी ही वेहद ताक़तें उसमें भर जाती हैं। इस प्रकार जब इन्सान पूर्ण हो जाता है तो पेट की वही छोंटी सी फ़ैक्ट्री जहाँ नौ महीने तक वह बन रहा था खुद ज़ोर करके उसे बाहर ढकेल देंती है और ससार यह देख कर चकित रह जाता है कि इस फ़ैक्ट्री में एक ही तरीक़े से लाखों इन्सान रोज बन कर निकल रहे हैं, किन्तु हर एक का नमूना भिन्न और अलग है शक्ल अलग, रग अलग, आवाज़ अलग, ताक़तें और सलाहियतें अलग, स्वभाव और विचार अलग, आचार और खूबिया अलग, यानी एक ही पेट से निकले हुये दो सगे भाई तक एक दूसरे से नहीं मिलते, यह ऐसा चमत्कार है जिसे देख कर अक़्ल दग रह जाती है। इस चमत्कार को देख कर भी जो इन्सान यह कहता है कि यह काम किसी ज़वरदस्त हिकमत, सूझवूझ और ज़वरदस्त ताक़त वाले और जवरदस्त ज्ञान रखने वाले और अनुपम चमत्कार रखने वाले ईश्वर के विना हो रहा है या हो सकता है, बेशक उसका दिमाग़ ठीक नहीं है। उसको अक़्लमन्द समझना अक्ल का अपमान करना है। कम से कम मैं तो ऐसे व्यक्ति को इस योग्य नही समझता कि किसी ज्ञानात्मक और माकूल मसले पर उससे बात करूँ।

مطويات الجاليات (٨٧/٥)

هل يوجد إله ؟

क्या ईश्वर है?

प्रकाशक :

सुलैयू इस्लामिक सेन्टर रेयाद

٠٩٠٣٠٠٤ هندي

المكتب التعاوني للدعوة والإرشاد وتوعية الجاليات بالسلي
ص.ب/١٤١٩ الرياض/١١٤٢١ هاتف/٢٤١٠٦١٥ ناسوخ/٢٤١٤٤٨٨-٢٣٢
البريد الإلكتروني/ sulay@w.cn